

भारत रत्न : 2019

राष्ट्रपति भवन (नई दिल्ली) ने 25 जनवरी, 2019 को पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, प्रसिद्ध संगीतकार भूपेन हजारिका और समाजसेवी नानाजी देशमुख को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किए जाने की घोषणा की गई।

सरकार ने चार वर्ष बाद भारत रत्न सम्मान की घोषणा की है। इससे पहले वर्ष 2015 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और पंडित मदन मोहन मालवीय (मरणोपरान्त) को भारत रत्न दिया गया था।

बीस वर्ष बाद यह पहला अवसर है जब दो से अधिक लोगों को भारत रत्न के लिए चुना गया है। इससे पहले वर्ष 1999 में जयप्रकाश नारायण, पंडित रविशंकर, डॉ अमर्त्य सेन और गोपीनाथ बारदोलोई को भारत रत्न दिया गया था।

प्रणब मुखर्जी भारत के तीसरे पूर्व राष्ट्रपति हैं जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया है। इनसे पहले वीवी गिरी (1975) और डॉ राजेन्द्र प्रसाद (1962) यह उपलब्धि प्राप्त कर चुके हैं।

इसके अलावा भारत रत्न से सम्मानित डॉ एपीजे अब्दुल कलाम (1997), जाकिर हुसैन (1962) और सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1954) भी भारत के राष्ट्रपति रह चुके हैं, परन्तु इन्हें राष्ट्रपति बनने से पहले ही 'भारत रत्न' सम्मान मिल गया था।

नानाजी देशमुख पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के बाद भारत रत्न से सम्मानित होने वाले आरएसएस से जुड़े दूसरे नेता हैं।

इस वर्ष की घोषणा के बाद भारत रत्न से सम्मानित विभूतियों की संख्या अब 48 हो गई है।

नानाजी देखमुख

मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किए गए समाजसेवी नानाजी देशमुख का पुरा नाम चंडिका दास अमृत राव देखमुख है।

11 अक्टूबर, 1916 को महाराष्ट्र के हिंगोली जिले में कडोली नामक गाँव में जन्में नानाजी देखमुख के पिता का नाम अमृतराव देखमुख तथा माता का नाम राजाबाई अमृतराव देखमुख था।

नानाजी देखमुख 12 वर्ष की आयु में संघ से जुड़े, फिर जनसंघ से राजनीति में आए। नानाजी देखमुख को शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण लोगों के बीच स्वावलम्बन हेतु किए गए कार्यों के लिए जाना जाता है।

वे आपातकाल के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के भी प्रमुख शिल्पकार रहे। ग्रामीण विकास के क्षेत्र में भी उनका उल्लेखनीय योगदान रहा। नानाजी देखमुख ने वर्ष 1950 में गोरखपुर में भारत के पहले सरस्वती शिशु मंदिर की स्थापना भी की थी।

नानाजी देखमुख ने 'दीनदयाल शोध संस्थान', 'ग्रामोदय विश्वविद्यालय' और 'बाल जगत' जैसे सामाजिक संगठनों की स्थापना भी की थी। विनोबा भावे के 'भूदान आन्दोलन' में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले नानाजी देखमुख को वर्ष 1999 में 'पद्म विभूषण' से भी सम्मानित किया गया था।

भूपेन हजारिका

मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित भूपेन हजारिका असम के बहुमुखी प्रतिभाशाली व्यक्तित्व थे।

असमी भाषा के कवि, गीतकार, संगीतकार व फिल्म निर्माता भूपेन हजारिका का जन्म तिनसुकिया जिले के सदिया कस्बे में 8 सितम्बर, 1926 को हुआ था। वे ऐसे विलक्षण कलाकार थे जो अपने गीतों को खुद लिखते थे, संगीतबद्ध करते थे और गाते थे। उन्हें दक्षिण एशिया के श्रेष्ठतम सांस्कृतिक दूतों में से एक माना जाता है।

भूपेन हजारिका ने अपनी मूल भाषा असमिया के अलावा हिन्दी, बंगाली सहित कई भारतीय भाषाओं में गायन कार्य किया। उन्होंने भारत की संगीत परम्परा को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाया। भूपेन हजारिका को पद्मश्री (1977), पद्म भूषण (2001), पद्म विभूषण (2012, मरणोपरान्त), संगीत नाटक अकादमी (1987), दादासाहेब फाल्के पुरस्कार (1992) और असम रत्न (2009) सम्मान भी प्राप्त थे।

उनके द्वारा निर्देशित फिल्म फिल्म शकुन्तला को वर्ष 1961 में सर्वश्रेष्ठ असमी फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था।

असम में लोहित नदी (ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी) पर बनाये गये देश के सबसे लम्बे ढोला-सदिया पुल का नामकरण हाल ही में भूपेन हजारिका के नाम पर किया गया है।

प्रणब मुखर्जी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रणब मुखर्जी का जन्म 11 दिसम्बर, 1935 को बंगाल प्रेसीडेन्सी (ब्रिटिश भारत) के बीरभूम जिले के मिराती गाँव में हुआ। पाँच दशक से अधिक समय तक राजनीति में सक्रिय रहे प्रणब मुखर्जी वर्ष 2012-17 तक भारत के 13वें राष्ट्रपति रहे।

राष्ट्रपति के अलावा प्रणब मुखर्जी केंद्रीय वित्त मंत्री (2009-12 व 1982-84), विदेश मंत्री (2006-09 व 1995-96) और रक्षा मंत्री (2004-06) भी रह चुके हैं।

इसके अलावा प्रणब मुखर्जी को वर्ष 1991 में तत्कालीन योजना आयोग का प्रमुख भी बनाया गया था।

2012 में राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने से पूर्व वह केन्द्र में वित्त मंत्री थे। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी 'द ड्रामेटिक डिक्लेड, द टर्बुलेंट ईयर्स और द कोलीजन ईयर्स' नामक पुस्तक भी लिख चुके हैं।

इनकी आत्मकथा शृंखला की 'द कोलीजन ईयर्स' नामक पुस्तक में राजनीतिक नजरिया प्रदान करने के साथ-साथ कुछ दुर्लभ रहस्यों को भी बताया गया है। प्रणब मुखर्जी को वर्ष 2008 में 'पद्म विभूषण' से भी सम्मानित किया जा चुका है।

जून 2018 में नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक कार्यक्रम को संबोधित कर आरएसएस के किसी कार्यक्रम में शामिल होने वाले पहले पूर्व राष्ट्रपति बने थे।